IKSGP-2025

द्वि–दिवसीय

बहु विद्याशाखीय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी

भारतीय ज्ञान प्रणाली : वैश्विक परिदृश्य

१०–११ फरवरी २०२५

Multidisciplinary two-day international conference

10-11 February 2025

Indian Knowledge System: Global Perspective

(IKSGP-2025)

प्रधानमंत्री उच्चतर शिक्षा अभियान (PM-USHA) योजना अंतर्गत

" Grants to Strengthen Colleges"

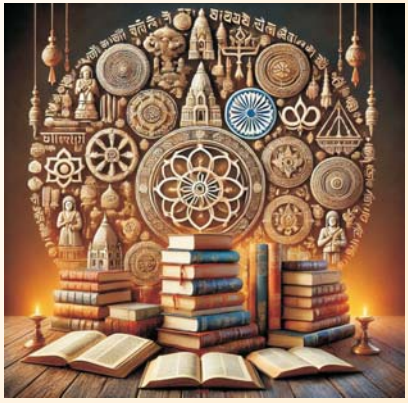

आयोजक :

हिन्दी विभाग

यशवंत महाविद्यालय, नांदेड

स्थान : शंकरराव चव्हाण मेमोरियल,
यशवंत महाविद्यालय कॅम्पस,
व्ही.आय.पी. रोड, नांदेड़

http://ymnnanded.in/

Registration Link: https://forms.gle/3m6rub11VghZ7pZb8

Full paper submission at : iksgp2025@gmail.com

payment Link: https://shardabhavan.in/ymn/conference-fee.php

मान्यवर,

हिन्दी विभाग, यशवंत महाविद्यालय, नांदेड एवं स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विश्वविद्यालय, नांदेड के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित 'भारतीय ज्ञान प्रणाली : वैश्विक परिदृश्य' विषय पर दिनांक 10-11 फरवरी 2025 को द्वि-दिवसीय बहु विद्याशाखीय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया जा रहा है। इस संगोष्ठी में आप इष्टमित्रों सहित सादर आमंत्रित हैं।

संगोष्ठी का निहितार्थ

भारतीय ज्ञान प्रणाली का वैश्विक परिदृश्य पर महत्त्वपूर्ण प्रभाव है, क्योंकि यह प्राचीन भारतीय दर्शन, संस्कृति, विज्ञान और प्रौद्योगिकी की धारा को समाहित करती है। भारतीय ज्ञान प्रणाली में वेद, उपनिषद, महाकाव्य, संस्कृत साहित्य, आयुर्वेद, योग, गणित, खगोलशास्त्र, संगीत, नृत्य, स्थापत्य और अन्य क्षेत्रों का समावेश है। इन ज्ञान प्रणालियों का प्रभाव न केवल भारतीय समाज पर बल्कि वैश्विक स्तर पर भी पड़ा है। इन दृष्टिकोणों को समझने और उनके उपयोग को बढ़ावा देने के लिए अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी एक महत्त्वपूर्ण मंच है, जो वैश्विक परिदृश्य में भारतीय ज्ञान की प्रासंगिकता और योगदान को रेखांकित करता है।

संगोष्ठी का उद्देश्य और महत्त्व

भारतीय ज्ञान प्रणाली पर अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन भारतीय संस्कृति और उसके ज्ञान की स्थायी धरोहर को पुनः जागरूक करने के लिए किया गया है। इस प्रकार की संगोष्ठियाँ भारतीय ज्ञान के वैश्विक संदर्भ में स्थान और महत्त्व को स्थापित करती हैं। इसके माध्यम से भारतीय शास्त्रों, दर्शन, और प्राचीन ज्ञान को पुनः जीवित किया जाता है, जो आज की डिजिटल और विज्ञान-आधारित दुनिया में भी प्रासंगिक है।

भारतीय ज्ञान प्रणाली पर आयोजित आंतरराष्ट्रीय संगोष्ठियाँ भारतीय संस्कृति और विज्ञान के विश्वव्यापी प्रभाव को उजागर करने के महत्वपूर्ण अवसर प्रदान करती हैं। ये संगोष्ठियाँ न केवल भारतीय ज्ञान को पुनः जीवित करती हैं, बल्कि वैश्विक समुदाय को एक समान और संतुलित दृष्टिकोण अपनाने के लिए प्रेरित करती हैं। इस प्रकार की पहल से न केवल भारतीय ज्ञान का प्रचार होता है, बल्कि विभिन्न देशों के विशेषज्ञ और शोधकर्ता आपस में विचारों का आदान-प्रदान करते हैं। इससे भारतीय ज्ञान की वैश्विक मान्यता बढ़ती है और भविष्य में इसके विभिन्न पहलुओं को शोध और विकास के क्षेत्र में महत्व मिलता है।

भारतीय ज्ञान प्रणाली में निहित तात्त्विक, वैज्ञानिक और सांस्कृतिक धरोहर का उपयोग आधुनिक समय की चुनौतियों से निपटने में किया जा सकता है, और यह दुनिया भर में लोगों के बीच सामंजस्य और सहयोग को बढ़ावा दे सकता है।

संस्था के बारे में:

श्री शारदा भवन एजुकेशन सोसाइटी की स्थापना 1952 में एक शैक्षिक संस्था के रूप में की गई थी, जिसका उद्देश्य अशिक्षा के अंधकार को दूर करना और राज्य के आर्थिक तथा औद्योगिक रूप से पिछड़े क्षेत्र में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करना था। संस्थापक अध्यक्ष माननीय डॉ. शंकररावजी चव्हाण (पूर्व केंद्रीय गृहमंत्री) ने 1956 में पहले विद्यालय की स्थापना की और इसके बाद 1963 में कला, वाणिज्य और विज्ञान के क्षेत्रों में उच्च शिक्षा की सुविधा शुरू की गई, इसके बाद कानूनी, तकनीकी और अध्यापक शिक्षा की सुविधाएँ भी जोड़ी गईं। संस्था ने दशकों तक अपनी शैक्षिक वृद्धि को निरंतर बनाए रखा और कई विद्यालयों और महाविद्यालयों का विस्तार किया। संस्था ने हमेशा शैक्षिक सुविधाओं को उन्नत करने की दिशा में काम किया, ताकि यह ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में होने वाले परिवर्तनों के साथ तत्पर रहे। इस योगदान को राज्य सरकार महाराष्ट्र से 'दलित मित्र पुरस्कार' और 'राज्य पुरस्कार' जैसे पुरस्कारों से पुरस्कृत किया गया है।

आज, श्री शारदा भवन एज्युकेशन संस्था महाराष्ट्र के मराठवाड़ा क्षेत्र में एक प्रतिष्ठित शैक्षिक संस्था के रूप में जानी जाती है। इस संस्था ने नांदेड जिले के शोध और शैक्षिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

कॉलेज के बारे में:

श्री शारदा भवन एज्युकेशन सोसाइटी ने 1963 में यशवंत महाविद्यालय, नांदेड़ की स्थापना की और तब से यह मराठवाड़ा क्षेत्र में उच्च शिक्षा का एक प्रमुख संस्थान बन गया है। महाविद्यालय ने शिक्षा के क्षेत्र में अपनी पहचान बनाई है और विभिन्न शैक्षिक, सांस्कृतिक और सामाजिक गतिविधियों में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

महाविद्यालय में शैक्षिक कार्यक्रमों की विविधता है, जो पारंपरिक, अतिरिक्त, आवश्यकता-आधारित और कैरियर-उन्मुख पाठ्यक्रमों का एक आदर्श मिश्रण प्रस्तुत करते हैं। ये पाठ्यक्रम अनुभवी और कुशल संकाय द्वारा पढ़ाए जाते हैं, जो छात्रों को उच्चतम स्तर की शिक्षा देने के लिए प्रतिबद्ध हैं। महाविद्यालय में कला, वाणिज्य और विज्ञान विषयों के लिए उन्नीस अनुसंधान केंद्र स्थापित हैं, जिनमें अड़तीस शोध निर्देशक कार्यरत हैं। इन शोध केंद्रों में लगभग 150 शोध छात्र अपनी शोध यात्रा में मार्गदर्शन प्राप्त करते हैं। इस प्रकार, यशवंत महाविद्यालय न केवल शिक्षा का केन्द्र है, बल्कि शोध और नवाचार का भी महत्वपूर्ण स्थल है।

महाविद्यालय स्नातक और स्नातकोत्तर कार्यक्रमों के लिए YCMOU, नासिक का अध्ययन केंद्र भी है, जिससे छात्रों को बेहतर शैक्षिक अवसर मिलते हैं। इसके अलावा, महाविद्यालय को यूजीसी नई दिल्ली द्वारा उत्कृष्टता की क्षमता वाले कॉलेज (CPE) के रूप में मान्यता प्राप्त है, जो संस्थान की शैक्षिक गुणवत्ता को प्रमाणित करता है। महाविद्यालय को विभिन्न पुरस्कारों से भी सम्मानित किया गया है। इसे स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाड़ा विश्वविद्यालय, नांदेड़ द्वारा सर्वश्रेष्ठ कॉलेज का पुरस्कार प्राप्त हुआ है। इसके अलावा, सर्वश्रेष्ठ प्रिंसिपल पुरस्कार, सर्वश्रेष्ठ शिक्षक पुरस्कार और सर्वश्रेष्ठ एन.एस.एस.अधिकारी राष्ट्रपति पुरस्कार जैसी मान्यताएँ भी प्राप्त हुई हैं। महाविद्यालय की पत्रिका 'यशोदीप' को स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाड़ा विश्वविद्यालय, नांदेड़ द्वारा दो बार प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किया गया है, जो इसके शैक्षिक और सांस्कृतिक योगदान को दर्शाता है। महाविद्यालय को 2023-24 के दौरान (PM-USHA) योजना के अंतर्गत अनुदान प्राप्त हुआ है, जो इसके समग्र विकास और छात्रों के लिए बेहतर सुविधाओं के निर्माण के लिए सहायक सिद्ध होगा।

यशवंत महाविद्यालय नांदेड़ ने शिक्षा, शोध और सामाजिक उत्तरदायित्व के क्षेत्र में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इसके समर्पित संकाय, शोध केंद्र और छात्रवृत्ति में उत्कृष्टता की परंपरा इसे मराठवाड़ा के प्रमुख शैक्षिक संस्थानों में से एक बनाती है।

हिंदी विभाग के बारे में:

श्री शारदा भवन एज्युकेशन संस्था की एक शाखा यशवंत महाविद्यालय की स्थापना 1963 में हुई थी। महाविद्यालय की स्थापना के साथ ही हिंदी विभाग भी कार्यरत हुआ, जो अहिंदी प्रदेश में हिंदी भाषा और साहित्य के प्रति छात्रों में रुचि उत्पन्न करने और मानवीय मूल्यों की स्थापना करने का कार्य निरंतर करता रहा है। हिंदी विभाग का योगदान सिर्फ भाषा शिक्षण तक ही सीमित नहीं रहा, बल्कि यह समाज में समरसता, संवाद और सामाजिक उत्तरदायित्व के आदर्शों को भी बढ़ावा देता रहा है।

हिंदी विभाग की स्थापना का मुख्य उद्देश्य इस क्षेत्र में हिंदी भाषा और साहित्य के प्रति छात्रों में गहरी रुचि और समझ का विकास करना था। विभाग ने शुरुआत से ही उच्च स्तरीय शैक्षिक कार्यक्रमों, संगोष्ठियों और साहित्यिक गतिविधियों का आयोजन किया, जो छात्रों को हिंदी साहित्य और संस्कृति से जोड़ने का कार्य करते हैं। विभाग ने साहित्य के विभिन्न रूपों (कविता, कहानी, निबंध और नाटक) के अध्ययन के साथ-साथ विद्यार्थियों को रचनात्मक लेखन के अवसर भी प्रदान किए। इससे छात्रों में साहित्यिक संवेदनशीलता और रचनात्मक सोच का विकास हुआ। हिंदी विभाग ने न केवल भाषा शिक्षण की दिशा में कार्य किया है, बल्कि छात्रों में भारतीय संस्कृति, साहित्य और मानवीय मूल्यों के प्रति गहरी समझ और सम्मान भी स्थापित किया है।

विभाग के प्रयासों का परिणाम यह रहा कि स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाड़ा विश्वविद्यालय, नांदेड़ द्वारा हिंदी विषय में इस विभाग की छात्र गायत्री सोलंकी को प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किया गया। यह पुरस्कार विभाग की उत्कृष्टता और विद्यार्थियों के प्रति इसके समर्पण का प्रमाण है।

विमर्श के बिन्दु :

1. भारतीय ज्ञान प्रणाली की वैश्विक दृष्टि
2. भारतीय ज्ञान प्रणाली : स्वरूप चिंतन और क्रमिक विकास
3. भारतीय ज्ञान प्रणाली : परिचय
4. भारतीय ज्ञान प्रणाली : परिभाषा
5. भारतीय ज्ञान प्रणाली : उद्देश्य
6. भारतीय ज्ञान प्रणाली : समसामयिक महत्व
7. भारतीय ज्ञान प्रणाली और भक्ति साहित्य
8. भारतीय ज्ञान प्रणाली और लोक साहित्य
9. यूरोपीय मतवाद और भारतीय ज्ञान प्रणाली

10. भारतीय ज्ञान प्रणाली और मानवीय मूल्य
11. भारतीय ज्ञान प्रणाली और विश्व बंधुत्व की भावना
12. भारतीय शिक्षा एवं शैक्षिक संस्थाओं का ऐतिहासिक अवलोकन
13. चार्वाक दर्शन: स्वरूप, संकल्पना और साहित्य
14. बौद्ध तत्वज्ञान: स्वरूप, संकल्पना और साहित्य
15. जैन तत्वज्ञान: स्वरूप, संकल्पना और साहित्य
16. योग दर्शन: स्वरूप, संकल्पना और साहित्य
17. सांख्य दर्शन: स्वरूप, संकल्पना और साहित्य
18. उत्तर मीमांसा दर्शन: स्वरूप, संकल्पना और साहित्य
19. पूर्व मीमांसा दर्शन: स्वरूप, संकल्पना और साहित्य
20. वैशेषिक दर्शन: स्वरूप, संकल्पना और साहित्य
21. न्याय दर्शन: स्वरूप, संकल्पना और साहित्य
22. भारतीय अर्थशास्त्र और नीतिशास्त्र का परिचय
23. प्राचीन भारतीय कला (संगीत और नाटक) और वास्तुकला (मंदिर और नगर नियोजन) का परिचय
24. सामाजिक संस्थाओं (पुरुषार्थ, आश्रम, धर्म और मूल्य) पर भारतीय दार्शनिक विचार।
25. भारत में गणित और खगोल विज्ञान का ऐतिहासिक विकास
26. स्वास्थ्य और औषधीय पद्धतियाँ आयुर्वेद और जीवनशैली (ऋतुचर्या, दिनचर्या आदि) का परिचय, चरक, सुश्रुत और वाग्भट्ट के संदर्भ में
27. धातु विज्ञान और पदार्थ विज्ञान से संबंधित प्राचीन भारतीय तकनीकें और उपलब्धियाँ
28. प्राचीन भारतीय कृषि पद्धतियाँ
29. आधुनिक हिंदी साहित्य में भारतीय ज्ञान परंपरा
30. आधुनिक भारतीय विचारकों का साहित्य पर प्रभाव
31. भारतीय परंपरा में सौंदर्यबोध और कलादृष्टि
32. राष्ट्रीय शिक्षा नीति और भारतीय ज्ञान परंपरा
33. भारतीय ज्ञान प्रणाली और इतिहास
34. भारतीय ज्ञान प्रणाली और खेल
35. भारतीय ज्ञान प्रणाली और वाणिज्य
36. भारतीय ज्ञान प्रणाली और सिनेमा
37. भारतीय ज्ञान प्रणाली और संस्कृत साहित्य
38. भारतीय ज्ञान प्रणाली और नाथ साहित्य
39. भारतीय ज्ञान प्रणाली और सिद्ध साहित्य

शोध पत्र एवं सारांश

- केन्द्रीय विषय से संबद्ध किसी भी पक्ष पर शोधपत्र आमंत्रित है।
- शोधपत्र अधिकतम 2500 शब्दों तथा सारांश 250 शब्दों में सीमित होना चाहिए।
- शोधपत्र हिन्दी /मराठी फांट-यूनिकोड और English - Times New Roman, फांट साईज 14 में ही होने चाहिए। शोधपत्र MS Word फाईल में मेल करें।
- पुस्तक में प्रकाशनार्थ उन्हीं शोधपत्रों पर चयन समिति विचार करेगी जो विषयोचित होंगे और उनके साथ प्रतिभागिता पंजीयन प्रपत्र शुल्क सहित होगा।
- तीन उत्कृष्ट शोधपत्रों को पुरस्कृत किया जाएगा।
- शोधपत्र 20 जनवरी, 2025 तक अनिवार्य रूप से इस पते पर मेल करें- iksgp2025@gmail.com

पंजीयन :

- प्रतिभागिता शुल्क प्राध्यापकों के लिए: रू. 2000/-
- विदेशी प्रतिभागियों के लिए : 50 $
- शोधार्थियों के लिए: रू.1200/-
- शोधपत्र पंजीयन प्रपत्र शुल्क सहित भेजना अनिवार्य है। इसकी सूचना मेल एवं वाट्सएप पर प्रमाण सहित भेजें।
- संयुक्त शोधपत्र होने पर सभी लेखकों को पृथक पंजीयन करवाना होगा।

पंजीकरण लिंक: https://forms.gle/3m6rub11VghZ7pZb8

पंजीकरण शुल्क लिंक:
https://shardabhavan.in/ymn/conference-fee.php

संपर्क सूत्र

- डॉ संदीप पाईकराव - +919421759024
- डॉ साईनाथ शाहू - +918668398917
- डॉ सुनील जाधव- +919405384672
- डॉ. विद्या सावते - +919860168219

स्थान : शंकरराव चव्हाण मेमोरियल, यशवंत महाविद्यालय कॅम्पस, व्ही.आय.पी. रोड, नांदेड़

विशिष्ट अतिथि वक्ता :

डॉ. विवेक मणि त्रिपाठी

हिंदी विभाग, क्वान्तोंग विदेशी भाषा
विश्वविद्यालय, चीन

प्रो. डॉ. तनुजा पदारथ बिहारी

हिंदी विभाग,भारतीय भाषा संकाय,
महात्मा गांधी संस्थान, मोका,मॉरीशस

डॉ. अनुषा निल्मिणी सल्वतुर

हिन्दी विभाग, केलानिया विश्वविद्यालय,
श्रीलंका

प्रो. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी

हिंदी विभाग अध्यक्ष, डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय
(केंद्रीय विश्वविद्यालय) सागर

डॉ. रेशमा अंसारी

हिंदी विभाग अध्यक्ष, मैट्स विश्वविद्यालय,
रायपूर, छत्तीसगढ.

डॉ. प्रणु शुक्ला

हिंदी विभाग,
राजकीय महाविद्यालय टोंक,राजस्थान

डॉ. नूरजहॉ रहमातुल्लाह

हिन्दी विभाग, कॉटन विश्वविद्यालय,
गुवाहाटी, असम

मुख्य संरक्षक

मा. अशोकराव चव्हाण
पूर्व मुख्यमंत्री,महाराष्ट्र सरकार तथा अध्यक्ष,
श्री शारदा भवन एज्युकेशन सोसाइटी, नांदेड़

मा. श्रीमती अमिता अ. चव्हाण
पूर्व विधायक,तथा उपाध्यक्ष,
श्री शारदा भवन एज्युकेशन सोसाइटी, नांदेड़

मा. डी.पी. सावंत
पूर्व उच्च शिक्षा मंत्री, महाराष्ट्र सरकार
तथा सचिव, श्री शारदा भवन
एज्युकेशन सोसाइटी, नांदेड़

मा. डॉ. रावसाहेब शेंदारकर
सह सचिव,
श्री शारदा भवन एज्युकेशन
सोसाइटी, नांदेड़

मा. उदयरावजी निंबालकर
कोषाध्यक्ष,
श्री शारदा भवन एज्युकेशन
सोसाइटी, नांदेड़

संयोजक

डॉ. गणेशचंद्र एन. शिंदे
प्राचार्य, यशवंत महाविद्यालय, नांदेड़
पूर्व प्र कुलपति, स्वा.रा.ती.म.विश्वविद्यालय, नांदेड़

आयोजन सचिव

डॉ. संदीप एस. पाईकराव
हिन्दी विभाग प्रमुख, यशवंत महाविद्यालय नांदेड़

आयोजन सह सचिव

डॉ. साईनाथ शाहू
हिन्दी विभाग, यशवंत महाविद्यालय नांदेड़

आयोजन समिति

डॉ. सुनील जाधव
हिन्दी विभाग, यशवंत महाविद्यालय नांदेड़

डॉ. विद्या सावते
हिन्दी विभाग, यशवंत महाविद्यालय नांदेड़

नांदेड़ शहर और इसके आसपास पर्यटन स्थान:

हज़ूर साहिब :

हज़ूर साहिब गुरुद्वारा सिख धर्म के पाँच तख़्तों में से एक है और यह भारत के महाराष्ट्र राज्य के नांदेड़ जिले में स्थित है। यह गुरुद्वारा विशेष रूप से महत्वपूर्ण है क्योंकि यह वह स्थान है जहाँ सिखों के दसवें गुरु श्री गुरु गोबिंद सिंह जी ने अपने जीवन के अंतिम क्षण बिताए थे। गुरु गोबिंद सिंह जी ने यहाँ 1708 में अपनी शहादत दी थी। हज़ूर साहिब सिखों के लिए एक प्रमुख तीर्थ स्थल है, जहाँ लाखों श्रद्धालु हर साल दर्शन करने के लिए आते हैं।

रेणुका देवी मंदिर :

साढ़े तीन शक्ति पीठों में से एक रेणुका देवी मंदिर महाराष्ट्र के नांदेड जिले में स्थित माहुर में है। यह मंदिर विशेष रूप से हिन्दू धर्म में एक महत्वपूर्ण तीर्थ स्थल माना जाता है। मान्यता है कि यहाँ देवी रेणुका की पूजा से भक्तों के सभी संकट समाप्त होते हैं और उन्हें मानसिक शांति एवं समृद्धि प्राप्त होती है।

औंढा नागनाथ मंदिर:

महाराष्ट्र राज्य के नांदेड़ जिले से लगभग 64 किलोमीटर दूर स्थित है। यह मंदिर भगवान शिव के 12 ज्योतिर्लिंगों में से एक है, और इसका धार्मिक महत्व अत्यधिक है। औंढा नागनाथ का प्रमुख आकर्षण भगवान शिव के प्रति श्रद्धा और भक्ति की एक सशक्त अभिव्यक्ति के रूप में देखा जाता है। मंदिर का शिखर और उसके आसपास की संरचनाएँ धार्मिक और सांस्कृतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं। यह स्थल न केवल धार्मिक स्थल है, बल्कि इसकी सुंदरता भी पर्यटकों और श्रद्धालुओं को आकर्षित करती है।

सहस्रकुण्ड :

नांदेड़ से लगभग 65 किलोमीटर दूर स्थित सहस्र कुण्ड जलप्रपात (Waterfall) एक अद्वितीय और सुरम्य पर्यटन स्थल है, जो अपनी प्राकृतिक सुंदरता के लिए प्रसिद्ध है। यह जलप्रपात न केवल अपनी जलधारा के लिए आकर्षक है, बल्कि इसके आसपास का वातावरण भी बहुत ही शांति और शांति प्रदान करने वाला है, जो पर्यटकों को अपनी ओर खींचता है।